ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VII Issue - III July - September - 2018

HINDI / SANSKRIT PART - I / HINDI PART - II

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - VII, ISSUE - III - JULY - SEPTEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI PART - II

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	आम आदमी की व्यथा कथा कोई दूसरा नहा **डॉ. राजेश भामरे**	१-४
२	गद्य व ज्ञानरचनावादी पाठ योजना **प्राचार्या डॉ. उर्मिला एम. धूतश्रीम** **क्षमा योगेश करजगांवकर**	५-७
३	पुरब अंग की ठुमरा **डॉ. वैशाली देशमुख**	८-११
४	कुसुमकुमार के नाटकों में सामाजिक संवेदना **स्मिता हनुमंतराव नायक** **डॉ. विजय गणेशराव वाघ**	१२-१७
५	महिला सशक्तिकरण और भारतीय राजनीति में सशक्त महिलायें **Dr. Himanshu Yadav**	१८-२४
६	जी.एस.टी. (G.S.T.) वस्तू एवं सेवा कर **प्रा. डॉ. वनिता त्र्यंबक पवार**	२५-२९
७	फ्रायवाड / मानसशास्त्रीय आलोचनात्मक पध्दतीयों का विकास **डॉ. रिना आर. सुरडकर**	३०-३२
८	स्त्री- विमर्श की दृष्टि से महादेवी वर्मा के संस्मरणात्मक रेखाचित्र **प्रा. सुरेंद्रकुमार गिरधारीलाल साहू** **प्रो. रमा नवले**	३३-३७
९	समकालीन कविता के कवि-कुँवर नारायण **प्रा. कु.अर्चना शरदराव कांबळे**	३८-४१
१०	गिरिराज किशोर की कहानियों में अभिव्यक्त नौकरशाहा **डॉ. संजीवकुमार नरवाडे**	४२-४९
११	भोजपूरी कवि घाघ का लोक-जीवन **डॉ.लियाकत मियाभाई शेख**	५०-५३

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

VOLUME - VII, ISSUE - III - JULY - SEPTEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR -5.5 (www.sjifactor.com)

३. पुरब अंग की ठुमरा

डॉ. वैशाली देशमुख
संगीतविभाग प्रमुख, शासकिय ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, औरंगाबाद.

भारतीय संगीतमें गायन के अनेक प्रकार गाये जाते है । उन प्रकारों मे ठुमरी यह गान प्रकार प्रचलीत है । यह गीत प्रकार भावनाओं से भरा हुआ होने कारण जनमानस के मन में ठुमरी गान प्रकार के प्रती अधिक लगाव है ऐसा लगता है । आज प्रायः सभी संगीतज्ञ कलाकार अपनी कला की, अभिव्यक्ती के लिये ठुमरी गान करना गौरव मानते है । अभिव्यक्ती का उत्तम साधन ठुमरी गान प्रकार है । ठुमरी गान एक लोकप्रिय गान प्रकार है । इसिलिये आज देश के अनेक विभिन्न भागों में ठुमरी की अनेक शैलियाँ विकसित होकर प्रचलीत हुई दिखाई देती है ।

ठुमरी के उगम के बारे में विभिन्न मान्यताएँ है ।१९वी शताब्दी में अवध के शासक वाजिद अली शाह के समय लखनऊ दरबार में ठुमरी गान शुरू हुआ । वाजिद अली शाह का उर्दु शायरी, नाट्य, संगीत, कथक नृत्य तथा ठुमरी के क्षेत्र में विशेष योगदान है । 'उन्होने अख्तर' इस उपनाम से अनेक संगीत रचनाएँ की ।

वाजिद अली शहा नाटक, संगीत और नृत्य के उस समय के सबसे बडे संरक्षक थे । वे अपने महल में ही संगीत-नृत्य का आयोजन किया करते थे । इसिलीये यह माना जाता है की, वाजिद अली शाह ही ठुमरी के आविष्कर्ता है । डॉ. सुशील कुमार चौबे के मतानूसार लखनऊ के उस्ताद सादिक अली खाँ ठुमरी के आविष्कर्ता माने जाते है ।

कॅप्टन विलर्ड ने अपनी पुस्तक 'ए ट्रिटिज ऑन दि म्युझिक ऑफ हिंदुस्थान' मे ठुमरी को ब्रजभाषा की मिश्रित बोली का गीत लिखा गया है । इसका अर्थ यही है की उस वक्त ठुमरी का प्रचलन होता रहा है। क्षेत्रमोहन गोस्वामी ने अपने ग्रंथ संगीतसार मे लखनऊ के शोरी मियाँ को ठुमरी का आविष्कर्ता माना है । लेकीन आगे संशोधन के उपरांत यह समझ आता है की शोरीमियाँ टप्पा के आविष्कार्ता थे ।

रागदर्पण और तोहफतुल - हिंद ये एतिहासिक दृष्टीसे अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाने वालों ग्रंथों मे ठुमरी गाने का प्रचलन था ऐसा लीखा हुआ है । तोहफतुल हिंदी मे ठुमरी को संकीर्ण रागिनी मानते हुऐ उसमें शंकाराभरण और मारू का मिश्रण माना गया है । ये दोनो ही ग्रंथों में ऐसा लीखा है की, फकीरूल्लाह के समय बरवा धुन के रूपमें ठुमरी का प्रचलन था ।

मिर्जा खाँ के समय पहाडी रूप में ठुमरी का प्रचलन रहा है । आईने अकबरी में श्री राग की रागिनियों मे बिहारी का उल्लेख है । इसी प्रकार ब्रजभाषा के कवि सुरदास के गेय पदों मे जंगला का उल्लेख मिलता है । ये दोनो ठुमरी की प्रसिध्द धूने है ।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

संगीतज्ञों के संशोधन के उपरान्त यह भी कहा जा सकता है , लोकधुनों के चर्चरी गीतों की परंपरासे ठुमरी प्रवाहीत हुई है ऐसा कहा जाता है ।

आज भारत के विविध प्रादेशीक भाषाओं के अनेक गीत ठुमरी से मिलते जुलते दिखाई देते है । उनमें से चैती, होरी, कजरी, पुरबी, झुमर पुर्वोत्तर प्रदेश मे गाये जाने वाले गीत, हिर माहीया व टप्पा पंजाब मे गाये जाने वाले गीत, लावणी (महाराष्ट्र) में गाये जाने वाले गीत, पद्य दक्षिण भारत का गीत काफी सिंध में गाये जाने वाला गीत इन सभी गीतोंमें ठुमरी के मिलते जुलते अवशेष प्राप्त होते है ।

वाजिद अली शाह के समय लखनऊ मे ठुमरी गान का इतना अधिक प्रचार व प्रसार हो गया था कि, १९वी शताब्दी के अंत त लखनऊ नगर को ठुमरी गान का एकमात्र केंद्र समझा जाता था । लखनऊ के पश्चिम की ओर प्रचलीत ठुमरी को प्रायः 'पछाहीं ठुमरी' और लखनऊ के पूर्व की और प्रचलीत ठुमरी को 'पुरबी ठुमरी' या 'पुरब अंग की ठुमरी' कहा जाता है । इनमे यह प्रमुख विभिन्नता है की, 'पछाही ठुमरी' मुख्यतः बोलबाँट की और पुरबी ठुमरी मुख्यतः बोलबनाव की प्रधानता में प्रचलीत है ।

ठुमरी मे बोलबाँट ठुमरी व बोलबनाव ठुमरी ये दो प्रणालीयाँ तयार हई है । बाँट शब्द का अर्थ खंड या प्रस्तार होता है । बोलबाँट ठुमरी में शब्द और स्वरसमुहों को लयकारी और ताल के अनेक प्रस्तारोंसे चमत्कृतिपूर्ण संयोजन करते है । बोलबनाव ठुमरी में शब्दोंके भावाभिव्यक्ती की और ज्यादा लक्ष्य देकर स्वरलहरीओंको भावयुक्त पेश करना ही महत्वपूर्ण लक्ष्य होता है ।

बोलबनाव की ठुमरी का प्रचलन विशेष रूप सें उत्तर भारत के पुर्वी भाग अर्थात बिहार की और अधिक होने के कारण इसे पुरब अंग की ठुमरी या पुरबी ठुमरी कहा जाता है । उत्तर भारत पुरब प्रदेशोंके चैती, कजरी, होरी इन लोकगीतों का इस ठुमरी पर बहुत प्रभाव है ।

पुरब अंग की बोलबनाव की ठुमरी गायन विधा गायकी में स्वर और बोलों की माध्यम माध्यम से बढत करते है । विलंबित लय का प्रयोग अत्यंत सहजता की ओर होता है । विस्तार के साथ अनेक समप्रकृतिक रागों की छाया दिखते हुऐ आविर्भाव , तिरोभाव करते है । भावाभिव्यक्ती अनेक रागों के मिश्रण के साथ की जाती है ।

पुरब अंग की ठुमरी की बंदिशे छोटी और सहज, सरल होती है । स्थायी और अंतरा मुख्य रूप से होता है । ऐसी ठुमरीयों की संख्या बहुत कम है । विलंबित लय की इन ठुमरीयोंमे गायक अमनी सुविधा अनुसार परीवर्तन कर गाने की इच्छा रखते है । ठुमरी गाते समय मुल धुन को अलग कर अनेक स्वरों का मिश्रणं कर चमत्कार दिखाया जाता है ।

बोलबनाव की ठुमरी रचनाओं की भाषा मुख्यतः ब्रज, अवंधी, भोजपूरी इत्यादी होती है । इसके अतिरिक्त उर्दु भाषा का अंतर्भाव होता है । इन ठुमरीयोंमे संयोग व वियोग दोनों विषय होते है और श्रृंगार रस से परीपूर्णहोनें के बाद भी करूण रस की अभिव्यक्ती दिखाई पडती है ।

Govt. College of Arts & Science Aurangabad

PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

ठुमरी गान में रागों का छायाभास व मिश्रण कौशल को मुख्यतः माँझ जिला कहा जाता है । मुर्की, खटका, मींड, जमजमा, गिटकरी, गमक इत्यादी अभिव्यक्ती के लिये प्रयोग कीया जाता है ।

शास्त्रीय दृष्टी से दर्द, हुक व पुकार ये काकू पध्दती में आते है । इनकी अभिव्यक्ती अर्थात गायनविधा के समय अनेकबार रे , अरे , हाँ , हे , हाय, इत्यादी संबोधक व स्तोंभाक्षरों का प्रयोग किया जाता है ।

बोलबनाव अथवा पुरब की ठुमरी में लोकधुनों के प्रभाव अधिक दिखाई देता है । माँड, बिहाग, पहाडी, खमाज, तिलंग, गारा, झिझोटी, बिहारी, तिलककामोद, देस , जोगिया, कालिंगडा, परज, सोहनी, काफी, सिंदुरा, बरवा, सिंधु पीलू जँगला, भैरवी, सिंध-भैरवी इत्यादी रागों में बोलबनाव की ठुमरीयाँ पारंपारीक रूप से गायी जाती है । गायकी विस्तार क्रम में पहले स्थायी के बोलोंकी भावाभिव्यक्ती की जाती है ।

स्थायी का मुखडा बारबार दिखाई देता है । विस्तार के बाद तबले में कहरवा की लग्गी बजाते हुऐ छोटी-छोटी मरकीयाँ , तिहाईयों के साथ सम पर आकर ठुमरी गान की समाप्ती की जाती है ।

इन सग विशेषताओं से युक्त पुरब अंग की ठुमरी अपने सुरीलेपन , चैनदारी, सहजतायुक्त भाव, स्वरोंका विशेष लगाव इसके लीये प्रसिध्द है । पुरब अंग की ठुमरी के मुख्यतः दो भेद माने जाते है ।१) लखनवी ठुमरी २) बनारसी ठुमरी

ये दोनो शैलीयाँ एक दुसरेंसे इतनी मिलती जुलती है भेद दिखाना आसान नही है । रचना और गायन विधा के माध्यम से दो शैलीयाँ भिन्न है यह दिखता है ।

१) लखनवी ठुमरी

लखनऊ और उसके निकट क्षेत्रों में विशेषतः प्रचलित होने के कारण इसे लखनवी शैली की ठुमरी कहा जाता है । इसकी रचनाऐ ब्रजभाषा में होती है । १९ वी शताब्दी के सुप्रसिध्द ठुमरीकार नवाब चौलक्खी वजीर मिर्जा बाला कदर उर्फ कदरपिया के नामसे अनेक ठुमरीयों की रचना की है ।

लखनवी ठुमरीयों मे 'भाखा' अर्थात ब्रज और अवधी के साथ उर्दु भाषा के शब्दों का उपयोग किया हुआ दिखाई देता है । एक प्रसिध्द ठुमरी का उदाहरण इस प्रकार है ।

ठुमरी भैरवी

स्थायी

बाबुल मोरा नइहर छोटोहि जाय ।

अंतरा

चार कहार मिल डोलिया उठावे ।

अपना बेगाना छुटो ही जाय

Govt. College of Arts & Science Aurangabad.
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad

वाजिद अली शाहने 'अख्तर' नाम से ठुमरीयों की रचना की है । भैरवी की इस ठुमरी में उर्दु भाषा का बेगाना शब्द 'पराया' इस भावार्थ से उपयोग में लाया गया है ।

नवाबी युग में इस ठुमरी का विकास होने के कारण उसमें तत्कालीन वातावरण का प्रभाव है । सामंती वैभव, विलास व दरबारी अदव इस ठुमरीमें विशेषरूप सें दिखाई पडती है । लखनऊ क्षेत्रों मे टप्पा और ठुमरी दोनों गान विधाओं का बहुत प्रचार है । इसी कारण लखनवी ठुमरी में टप्पा गान के कुछ स्वरसंदर्भ मिलते है । लखनऊ गझल और उर्दु शायरी के विकास एक प्रमुख केंद्र माना जाता है । इसलीये फलस्वरूप लखनवी ठुमरी में बीच - बीच में उर्दु भाषा के शेर कहने की भी परंपरा दिखाई देती है ।

२)बनारसी शैली

बनारस नगर और निकट क्षेत्र में विशेषरूप में इस ठुमरी का प्रचलन दिखाई देता है। और इसिलीये इस ठुमरी को बनारसी शैली की ठुमरी कहा जाता है । इस ठुमरी में ब्रज भाषा के साथ भोजपुरी व मगही बोलीयों का प्रयोग प्रायः कीया जाता है । इस ठुमरी पर चैती, कजरी, पुरबी, झुमर के लोकधुनों का बहुत प्रभाव है । इसमे दोहा, सोरठा, सवैय्या कवित आदि रचनाए बीच-बीच मे गाने का प्रचलन है । ठुमरी के अनेक प्रकार प्रांतो की विभिन्नता के कारण प्रचलन मे अधिकतर है । एक सुंदर पारंपारिक गान-विधा है किसी भी गान-विधा उच्च-निच नही होती है । वह अपने अपने स्थान पर स्थित है । आज के युग में ठुमरी की स्थिती को देखते हुए यह निसःदेह कहा जा सकता है की ठुमरी एक श्रेष्ठकलानिष्ठ, भावविभोर , आकर्षक श्रृंगाररसपुर्ण कलात्मक गान-विधा है । भारतीय संगीत में यह गान-विधा अतुलनीय है ।

संदर्भ सुची

१) कथकनृत्य - लक्ष्मीनारायण गर्ग
२) ठुमरी की उत्पत्ती, विकास और शैलीयाँ- शत्रुघ्न शुक्ला.
३) संगीतशास्त्रकार व कलावंत यांचा इतिहास - ल.द. जोशी
४) संगीत ठुमरी - अंक जनवरी १९४७.
५) संगीत विशारद - वसंत.

Govt. College of Arts & Science Aurangabad
PRINCIPAL
Govt. College of Arts & Science
Aurangabad